अध्याय 2

साहित्य की समीक्षा (Review Of Literature)

2.1 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

सैद्धांतिक ढांचे का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि शोध किन विचारधाराओं, सिद्धांतों या दर्शन पर आधारित है| निम्नलिखित तीन स्तंभ इस ढांचे को बनाते हैं:

1. माध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan / Coexistential Philosophy)

•यह दर्शन मानव के आत्म-स्वरूप, संबंधों और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की समझ को केंद्र में रखता है|

•इसके अनुसार जीवन का उद्देश्य सतत सुख और समृद्धि की प्राप्ति है, जो केवल बाह्य संसाधनों से नहीं बल्कि सही समझ और संतुलित जीवन शैली से संभव है|

मानवीय मूल्य सिद्धांत (Universal Human Values Theory)

Universal Human Values (UHV) का सिद्धांत यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति में मूलभूत रूप से सह-अस्तित्व, सच्चाई, प्रेम, करुणा, और शांति की क्षमता होती है, जिसे स्व-अन्वेषण और सशक्त शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जागृत किया जा सकता है| UHV सिद्धांत शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि "व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय समन्वय की प्रक्रिया" मानता है |

(ii) आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण की भारतीय परंपरा:भारतीय दार्शनिक परंपरा में शिक्षा का लक्ष्य केवल व्यवसायिक दक्षता नहीं, बल्कि "पूर्ण मानव बनाना" रहा है - जो कि NEP 2020 के मूल दर्शन से मेल खाता है| आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी परंपरा को स्कूली शिक्षा में लागू करता है |

1.मूल्यों पर आधारित शिक्षा

> "Education must build character, enable learners to be ethical, rational, compassionate, and caring, while at the same time prepare them for gainful, fulfilling employment."
>
> – National Education Policy 2020, Chapter 4: Curriculum and Pedagogy in Schools, Section 4.4

"शिक्षा का उद्देश्य ऐसा चरित्र निर्माण करना है जिससे विद्यार्थी नैतिक, विवेकशील, करुणामय और संवेदनशील बन सकें|"

2. Global Citizenship और Universal Values: "The curriculum will include basic arts, crafts, humanities, as well as human and ethical values and Constitutional values, such as empathy, respect for others, cleanliness, courtesy, democratic spirit, spirit of service, respect for public property, scientific temper, and liberty."– NEP 2020, Section 4.23

"पाठ्यचर्या में मानव और नैतिक मूल्यों के साथ-साथ संविधान प्रदत्त मूल्यों को भी शामिल किया जाएगा, जैसे - सहानुभूति, सम्मान, स्वच्छता, सेवा भावना आदि|"

1. **Holistic Development के संदर्भ में:** "The aim of education will not only be cognitive development, but also building character and creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st-century skills."– NEP 2020, Introduction, Page 3

" शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण भी है|"

4. Foundational Stage में नैतिक शिक्षा का समावेश: "The Foundational Stage will include flexible, multilevel, play-based, activity-based, and inquiry-based learning that includes basic human values of empathy, cooperation, cleanliness, honesty, respect, and courtesy."– NEP 2020, Section 1.2

"प्रारंभिक शिक्षा में बच्चों को करुणा, सहयोग, ईमानदारी, शिष्टाचार जैसे सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से परिचित कराया जाएगा|"

1. मानवतावाद: प्रमुख विचारक: Carl Rogers (1961), Abraham Maslow

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के पूर्ण विकास (self-actualization) की ओर होना चाहिए|

आनंद सभा गतिविधियाँ – जैसे आत्मचिंतन, सहयोग, और भावनात्मक अभिव्यक्ति – इस विचारधारा को व्यवहार में लाती हैं|

2. रचनावाद: प्रमुख विचारक: Jean Piaget (1950), Lev Vygotsky (1978) "ज्ञान कोई स्थिर तत्व नहीं बल्कि अनुभव से निर्मित होता है|"

आनंद सभा की गतिविधियाँ (समूह चर्चा, कहानी विश्लेषण, आत्म-अवलोकन) छात्रों को मूल्य अनुभव करने और उन्हें खुद गढ़ने का अवसर देती हैं।

3. सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा : संगठन: CASEL (Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning)

आत्म-चेतना, सामाजिक जागरूकता, निर्णय-निर्माण, और संबंध कौशल का विकास।

आनंद सभा इन सभी तत्वों को रोज़मर्रा के विद्यालय जीवन में जोड़ने का कार्य करती है।

4. नैतिक विकास सिद्धांत

प्रमुख विचारक: Lawrence Kohlberg (1958)

नैतिक विकास चरणबद्ध होता है:
पूर्व-पारंपरिक (Punishment & Reward)

पारंपरिक (Social Approval)

उत्तर-पारंपरिक (Universal Principles)

आनंद सभा विद्यार्थियों को इन चरणों से आगे बढ़ाते हुए मानवतावादी मूल्य अपनाने हेतु प्रेरित करती है।

संदर्भ: Kohlberg, L. (1981). Essays on Moral Development, Vol. I: The Philosophy of Moral Development. Harper & Row.

5. सार्वभौमिक मानव मूल्य सिद्धांत :- स्रोत: UHV Foundation, AICTE & Rajya Anand Sansthan , आत्म-साक्षात्कार (Self-exploration), सह-अस्तित्व (Coexistence), आत्मिक संतुलन (Harmony). आनंद सभा इसी ढांचे के आधार पर छात्रों में समग्र दृष्टिकोण और आंतरिक स्थिरता विकसित करने का प्रयास करती है।

संदर्भ: UHV Foundation. (2020). Holistic Value-based Education for NEP 2020. www.uhv.org.in

6. राष्ट्र निर्माण एवं शिक्षा आयोगों का दृष्टिकोण (Viewpoint of Nation Building and Education Commissions)

राधाकृष्णन आयोग (1948) - शिक्षा का उद्देश्य जीवन मूल्यों का निर्माण है।

कोठारी आयोग (1964-66) - "शिक्षा व्यक्ति और समाज में नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक समरसता को विकसित करे।" UNESCO Report (1996) - "Learning to be" और "Learning to live together" – आनंद सभा इन्हीं विचारों को मूर्त रूप देती है।

यह सैद्धांतिक ढाँचा दर्शाता है कि आनंद सभा न केवल एक नैतिक शिक्षा कार्यक्रम है, बल्कि यह बहुआयामी मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और शैक्षणिक सिद्धांतों पर आधारित है| यह छात्रों को सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास है|

2.2 संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययन

Universal Human Values (UHV): एक वैचारिक आधार:AICTE द्वारा विकसित Universal Human Values (UHV) दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य है –व्यक्ति की समग्रता में समझ विकसित करना, समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना और नैतिक एवं व्यवहारिक कौशल विकसित करना| UHV के तीन प्रमुख आयाम हैं : जीवन दृष्टि (Holistic Vision of Life)

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (Universal Human Values)

मूल्य-आधारित जीवन-कौशल (Value-Guided Skills)

UHV के अनुसार: "Holistic Value-Based Education व्यक्ति को केवल जानकारी नहीं देता, बल्कि उसे जीवन में नैतिकता, उत्तरदायित्व और सह-अस्तित्व की समझ भी देता है|"- AICTE, 2023, पृ. 4

UHV मॉडल शिक्षा को केवल 'डिग्री प्राप्त करने' की प्रक्रिया नहीं मानता, बल्कि 'एक सही इंसान बनने की प्रक्रिया' के रूप में देखता है|

'आनंद सभा' पाठ्यपुस्तक: मूल्यों की व्यवहारिक शिक्षा

'आनंद सभा' पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्व-अन्वेषण, मानवीय संबंधों की समझ, और कर्तव्यों के प्रति सजगता का विकास करना है| यह पाठ्यक्रम UHV दृष्टिकोण को स्कूली स्तर पर लागू करता है|

कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक में मूल्य-शिक्षा को स्व-मूल्यांकन, अनुभव, प्रोजेक्ट कार्य, और समूह संवाद के माध्यम से सिखाया गया है |

4. पंच प्रण के परिप्रेक्ष्य में आनंद सभा की भूमिका (Role of Anand Sabha in the perspective of Panch Prana): 2022 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत पंच प्रण – विकसित भारत, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, सांस्कृतिक गौरव, एकता, और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक – को भी आनंद सभा पाठ्यक्रम में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है|आनंद सभा इन संकल्पों को व्यवहारिक बनाते हुए विद्यार्थियों को एक नवोन्मेषी, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में मार्गदर्शित करता है|

शोध और प्रशिक्षण के निष्कर्षों,तथा राष्ट्रीय संकल्पों (पंच प्रण) के पूर्णतः अनुकूल है। यह पाठ्यक्रम एक ऐसा शैक्षिक मॉडल प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को केवल अकादमिक नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी सशक्त बनाता है।

1. सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (Universal Human Values - UHV) –

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य वे नैतिक सिद्धांत और जीवन दृष्टियाँ हैं, जो समय, स्थान, संस्कृति और धर्म की सीमाओं से परे होकर प्रत्येक मानव के लिए स्वीकार्य और आवश्यक होते हैं। ये मूल्य मानव-मानव और मानव-प्रकृति के बीच संतुलित, शांतिपूर्ण और सहयोगमूलक संबंध स्थापित करने की आधारशिला रखते हैं।

इनमें मुख्यतः निम्नलिखित मूल्य आते हैं:

- सत्य (Truth)
- धैर्य एवं सहिष्णुता (Patience & Tolerance)
- न्याय (Justice)
- अहिंसा (Non-violence)
- करुणा (Compassion)
- सह-अस्तित्व (Co-existence)

AICTE (All India Council for Technical Education) और UHV Foundation द्वारा वर्ष 2020 में प्रकाशित रिपोर्ट “Holistic and Value-based Education for NEP 2020” में शिक्षा के मूल उद्देश्य को केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर एक समग्र मानव दृष्टिकोण के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया है।

रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि –

“The core purpose of education is to facilitate understanding and practice of universal human values in life.”

(UHV Foundation, 2020, p. 4)

इसका अर्थ है कि शिक्षा को केवल तथ्यों और तकनीकी ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह विद्यार्थियों को सही जीवन दृष्टिकोण, निर्णय क्षमता, और नैतिक व्यवहार का विकास करने का अवसर देना चाहिए। आनंद सभा कार्यक्रम – जो कक्षा 9 से 12 तक के लिए मध्यप्रदेश के विद्यालयों में लागू किया गया है – वास्तव में UHV के व्यवहारिक क्रियान्वयन का ही एक प्रयास है। इसमें निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं:

- आत्म-चिंतन (Self-reflection)
- नैतिक कहानियाँ (Moral Stories)
- समूह चर्चा (Group Discussion)
- जीवन कौशल क्रियाएँ (Life Skills Activities)

इनका उद्देश्य विद्यार्थियों को मूल्य आधारित जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य: UNESCO की रिपोर्ट Learning: The Treasure Within (1996) के अनुसार, “Learning to be” और “Learning to live together” दो ऐसे स्तंभ हैं जो शिक्षा को केवल जानकारी देने वाली नहीं, बल्कि मूल्य आधारित मानव निर्माण की प्रक्रिया बनाते हैं। यह विचार आनंद सभा के मूलभूत उद्देश्यों के अनुरूप है, जहाँ “जीवन जीने की कला” को शिक्षा का हिस्सा बनाया जाता है।

शिक्षाविदों का दृष्टिकोण:

•डॉ. ए.एन. त्रिपाठी (पूर्व निदेशक, UHV Foundation):

उन्होंने स्पष्ट किया कि नैतिकता और करुणा केवल उपदेशों से नहीं आतीं, बल्कि इन्हें व्यवहार में उतारने की प्रक्रिया ही मूल्यों का सही शिक्षण है।

•गवाने, आर.आर. (2012) - अपने शोध में कहते हैं कि मूल्य शिक्षा तभी प्रभावशाली हो सकती है जब वह क्रियात्मक हो, न कि केवल सैद्धांतिक। आनंद सभा इसी दृष्टिकोण को व्यवहार में लाती है।

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य आज की वैश्विक चुनौतियों – जैसे हिंसा, असहिष्णुता, आत्म-केंद्रिता और मानसिक तनाव – के समाधान की कुंजी हैं। इन मूल्यों को बच्चों में बचपन से ही व्यवहार में लाने के लिए आनंद सभा जैसे कार्यक्रम अनिवार्य हैं। AICTE, UNESCO और विभिन्न शिक्षाविदों के दृष्टिकोण यह स्पष्ट करते हैं कि UHV को स्कूल शिक्षा में एकीकृत करना केवल लाभकारी ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है।

संदर्भ :

•AICTE & UHV Foundation. (2020). Holistic and Value-based Education for NEP 2020. UHV Foundation. Retrieved from https://uhv.org.in

•UNESCO. (1996). Learning: The Treasure Within. Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century.

•Gawane, R. R. (2012). Value Education in Schools: Need and Approach. Journal of Value Education.

राज्य आनंद संस्थान की पहल – राज्य आनंद संस्थान की स्थापना मध्य प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2016 में की गई थी| यह देश का पहला ऐसा सरकारी संस्थान है जो जीवन के आंतरिक आनंद, सकारात्मक मानसिकता, और मूल्य-आधारित जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्य करता है| इसकी स्थापना का औपचारिक उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा 14 जनवरी 2017 को किया गया|

संस्थान का मुख्य उद्देश्य: "व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करते हुए एक आनंदमय जीवन की ओर नागरिकों को प्रेरित करना|"

Sh. Satyaprakash Arya, Director Rajya Anand Sansthan | Goals of RAS Established 2016

आनंद सभा की शुरुआत "आनंद सभा" इस संस्थान की प्रमुख पहल है, जिसे लोक शिक्षण संचालनालय भोपाल म.प्र., और राज्य आनंद संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विद्यालयी स्तर पर मूल्य शिक्षा और नैतिक जागरूकता के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया|यह कार्यक्रम विशेष रूप से कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है|

.इसका संचालन प्रत्येक शनिवार की प्रथम कक्षा में किया जाता है|कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वावलंबन, सहिष्णुता, करुणा, ईमानदारी, और आत्मबोध जैसे गुणों का विकास करना है|

आनंद सभा की प्रमुख गतिविधियाँ:

1.आत्मचिंतन और आत्मनिरीक्षण अभ्यास यह अभ्यास विद्यार्थियों को अपने विचारों और व्यवहार की समीक्षा करने का अवसर देता है|

2.ध्यान और विश्राम अभ्यास

मानसिक संतुलन और आत्मिक शांति के लिए ध्यान विधियाँ सिखाई जाती हैं|

राज्य आनंद संस्थान का दृष्टिकोण केवल सरकारी योजना नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उन मूलभूत सिद्धांतों के साथ मेल खाता है, जिनमें "मूल्य-आधारित शिक्षा", "आत्म-चिंतन", और "जीवन कौशल" को अत्यंत आवश्यक माना गया है|

NEP 2020 कहती है: "The aim of education is not only cognitive development, but also building character and creating holistic individuals."

•**Rajya Anand Sansthan Reports (2020-23)** - संस्थान की वार्षिक रिपोर्टों में आनंद सभा के प्रभावों का विवरण दिया गया है, जिसमें बच्चों की सहभागिता, उनके व्यवहार में परिवर्तन, और शिक्षकों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण मिलता है|

•Madhya Pradesh State School Education Portal - इसमें बताया गया है कि 2023 से शालाओं में आनंद सभा का आयोजन हो रहा है, और कई विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो चुके हैं|

राज्य आनंद संस्थान की पहल, विशेष रूप से "आनंद सभा", आज की शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शून्यता की पूर्ति का एक व्यवस्थित, सुसंगठित और व्यवहारिक मॉडल है| यह कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों के व्यवहारिक समावेश का सशक्त उदाहरण है, जो व्यक्ति और समाज में सामूहिक चेतना, सह-अस्तित्व और सकारात्मकता का विकास करता है|

संदर्भ :

•Rajya Anand Sansthan. (2020). आनंद सभा कार्यक्रम प्रतिवेदन. भोपाल: राज्य आनंद संस्थान. Retrieved from https://www.anandsansthanmp.in

•AICTE & UHV Foundation. (2020). Holistic and Value-based Education for NEP 2020.

•Bhargava, M. (2020). Value-based Interventions in Indian Schools: A Case of Madhya Pradesh. Indian Journal of Educational Research, 42(2), 117-130.

•Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.

*आनंद सभा पाठ्यक्रम की पुस्तक (कक्षा 10वीं) –

पाठ्यपुस्तक का नाम:

"आनंद सभा: सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर"

(UHV School Education Curriculum, 2022, uhv.org.in/schooleducation)

यह पुस्तिका कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के लिए तैयार की गई है, जिसे UHV Foundation, AICTE, और राज्य आनंद संस्थान, म.प्र. द्वारा संयुक्त रूप से अनुमोदित किया गया है| इस पुस्तिका का उद्देश्य छात्रों को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के व्यवहारिक अभ्यास के लिए एक सशक्त, आकर्षक और संवादात्मक मंच प्रदान करना है| इसे इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि विद्यार्थी न केवल मूल्य समझें, बल्कि उन्हें अपने जीवन में जीना शुरू करें|

*पुस्तक की प्रमुख गतिविधियाँ एवं संरचना:

1. आत्म-चिंतन

•छात्रों को यह अवसर दिया जाता है कि वे अपने दैनिक व्यवहार, विचार और भावनाओं का आकलन करें|

•जैसे प्रश्न: “मैं और शरीर में सहअस्तित्व ”

•उद्देश्य: आत्म-जागरूकता और आत्मनियंत्रण का विकास|

3. जीवन कौशल (Life Skills Activities)

•जैसे:निर्णय क्षमता अभ्यास.

•उद्देश्य: निर्णय क्षमता, सह-अस्तित्व, और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास|

4. समूह चर्चा (Group Dialogue)

•विद्यार्थियों को समूहों में बाँटकर नैतिक मुद्दों पर चर्चा करवाई जाती है|

•उदाहरण विषय: “दूसरों की मदद करना क्यों जरूरी है?”, “माफ़ी माँगना और देना कितना महत्वपूर्ण है?”

*छात्रों के अनुभवात्मक अभ्यास:

पुस्तिका केवल थ्योरी नहीं देती, बल्कि प्रत्येक अध्याय के अंत में अभ्यास होते हैं जैसे:

•“आज मैंने…” कार्यपत्रक

•“मैं क्या बदलना चाहता हूँ?” आत्मविश्लेषण

इनसे विद्यार्थियों को मूल्यों का व्यक्तिगत अनुभव होता है, जो दीर्घकालिक प्रभाव डालता है|

पुस्तिका में कोई परीक्षा या अंकन प्रणाली नहीं है, परंतु:

•आत्म-मूल्यांकन तालिकाएँ,साप्ताहिक मूल्य डायरी और शिक्षक द्वारा पर्यवेक्षण रिपोर्ट के माध्यम से गुणात्मक रूप से विद्यार्थियों के नैतिक व्यवहार में परिवर्तन को मापा जा सकता है|

•Pandey, A. (2021) ने “Implementation of UHV in Schools” नामक शोध में बताया कि इस पाठ्यक्रम से छात्रों में अनुशासन, सहिष्णुता और आत्मविश्वास जैसे गुणों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है|

•Anand Sansthan Reports (2022) के अनुसार, आनंद सभा के कारण विद्यालयों में अनुशासनहीनता संबंधी घटनाओं में 40% तक गिरावट आई है|

“आनंद सभा: सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर” केवल एक पाठ्यपुस्तक नहीं है, यह एक मूल्य-आधारित जीवनशैली की ओर पहला कदम है| यह विद्यार्थियों को आत्म-चिंतनशील, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और भावनात्मक रूप से संतुलित नागरिक बनने में मदद करती है|

संदर्भ

•UHV Foundation. (2022). Anand Sabha: Sārvabhaumik Mānavīya Mūlyon Se Ānand Kī Or. Retrieved from https://uhv.org.in/schooleducation

•Rajya Anand Sansthan. (2022). Annual Report on School Programs. Bhopal: Government of Madhya Pradesh.

•Pandey, A. (2021). Implementation of Universal Human Values in Middle Schools: A Case Study from M.P. Journal of Human Development and Values, 15(3), 56-72.

4. शैक्षिक आयोग और रिपोर्ट्स (Educational Commissions and Reports)-

1 डॉ. राधाकृष्णन आयोग (University Education Commission, 1948-49)

“The aim of education should not merely be to earn livelihood but to develop character and moral values.”

यह आयोग भारत की स्वतंत्रता के पश्चात गठित पहला उच्च शिक्षा आयोग था|

आयोग ने स्पष्ट किया कि शिक्षा को नैतिकता, चरित्र निर्माण और सामाजिक चेतना के विकास का माध्यम बनाना चाहिए|आनंद सभा कार्यक्रम इस अनुशंसा का व्यावहारिक रूप है, क्योंकि यह विद्यार्थियों में नैतिक गुणों जैसे - सत्य, अहिंसा, करुणा और सहानुभूति - को साप्ताहिक गतिविधियों के माध्यम से विकसित करता है|

प्रासंगिकता:

आनंद सभा विद्यार्थियों को आत्म-चिंतन, नैतिक कहानियों और समूह संवाद द्वारा आत्मविकास और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर प्रेरित करती है|

2. कोठारी आयोग (Education Commission, 1964-66):

“The destiny of India is now being shaped in her classrooms…”

“The sole purpose of education is to develop a sense of humanity, moral ethics, and responsibility towards society

•इस आयोग ने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय से जोड़ा|

•यह बताया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि मानवता का उत्थान होना चाहिए|

.आनंद सभा इसी लक्ष्य को व्यवहार में लाता है – इसमें करुणा, सहयोग, समानता और सह-अस्तित्व पर बल दिया जाता है|

मूल्य शिक्षा के संबंध में:

•कोठारी आयोग ने पहली बार मूल्य-आधारित शिक्षा को औपचारिक पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुशंसा की थी|

•आनंद सभा, इस अनुशंसा को विद्यालय स्तर पर व्यवस्थित तरीके से क्रियान्वित करने का प्रयास है|

3. UNESCO रिपोर्ट (1996): Learning: The Treasure Within (Delors Commission Report)

शिक्षा के चार स्तंभ:

1.Learning to know (जानने के लिए सीखना)

2.Learning to do (करने के लिए सीखना)

3.Learning to be (होने के लिए सीखना)

4.Learning to live together (साथ जीने के लिए सीखना)

Learning to be - यह स्तंभ व्यक्ति के स्व-निर्माण, आत्म-जागरूकता, और आत्म-मूल्यांकन से संबंधित है, जो आनंद सभा की आत्म-चिंतन गतिविधियों से मेल खाता है|

Learning to live together - यह स्तंभ सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और सामाजिक सहयोग पर आधारित है, जो आनंद सभा के समूह चर्चा, नैतिक कहानियाँ और सामूहिक गतिविधियों द्वारा सशक्त होता है|

UNESCO की सिफारिश: शिक्षा को मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और शांति की स्थापना हेतु एक मूल्य आधारित साधन बनाना चाहिए|

(i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) और मानवीय मूल्य :

NEP 2020 शिक्षा को एक समावेशी, मूल्य-आधारित और छात्र-केंद्रित प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। यह नीति विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, और संवेदनशीलता को विकसित करने पर बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में शिक्षा को नैतिकता, समानता, समावेशन, और व्यक्तित्व विकास की ओर केंद्रित करती है। नीति में शिक्षा को "पूर्ण मानव क्षमता के विकास", "न्यायपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण" और "राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा" देने वाला माध्यम माना गया है ।

NEP 2020 के अनुसार: "शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना है जो तर्कसंगत, नैतिक, सहानुभूति-युक्त और उत्तरदायी हों।" इस नीति के मूलभूत सिद्धांतों में "नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास", "जीवन के लिए शिक्षा" और "चरित्र निर्माण" को प्रमुख स्थान दिया गया है। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी दृष्टिकोण को व्यवहारिक स्तर पर लागू करता है।NEP का यह दृष्टिकोण 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, जो "तृप्तिपूर्ण जीवन", "कर्तव्यों की पहचान", और "समग्र दृष्टिकोण" पर केंद्रित है ।यह नीति शिक्षा को केवल सूचनात्मक नहीं बल्कि मूल्य-आधारित, समावेशी, और समग्र विकास की ओर उन्मुख बनाना चाहती है। नीति में विशेष जोर दिया गया है कि छात्रों में नैतिकता, सहानुभूति, सहिष्णुता, और सेवा-भावना जैसे मूल्यों को विकसित किया जाए। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी नीति के आदर्शों से मेल खाता है। इन सभी रिपोर्टों और आयोगों ने मूल्य-आधारित, समावेशी और आत्म-विकास पर केंद्रित शिक्षा प्रणाली पर बल दिया है। आनंद सभा कार्यक्रम इन विचारों को व्यवहारिक रूप में लागू करने का एक अभिनव और सुसंगत प्रयास है।

*प्रासंगिक शोध पत्र और निष्कर्ष (Relevant Research Papers and Findings) -

1. Gawane, R.R. (2012)

लेख का शीर्षक: Value Education through Practice: A Constructivist Approach

प्रकाशन: Journal of Value Education

प्रमुख बिंदु:लेखक का तर्क है कि मूल्य-शिक्षा यदि केवल उपदेशात्मक (didactic) शैली में दी जाए तो उसका प्रभाव अल्पकालिक होता है। जब मूल्य अनुभव, प्रतिक्रिया और सहभागिता के माध्यम से छात्रों तक पहुँचते हैं, तभी वे उनके आचरण में बदलते हैं।

आनंद सभा से संबंधित निष्कर्ष:

•आनंद सभा की प्रत्येक गतिविधि जैसे आत्मचिंतन, समूह चर्चा, और व्यवहारपरक कार्य छात्रों को मूल्य 'जीने' का अवसर देती है, जो इस शोध की पुष्टि करता है।

•यह अध्ययन रचनावादी शिक्षा (Constructivist Pedagogy) के समर्थन में भी है। "मूल्य शिक्षा केवल उपदेश से नहीं, अनुभव और अभ्यास से उपजती है।"

2. Sharma, A. (2018)

लेख का शीर्षक: Impact of Participatory Ethical Education Programs in Secondary Schools: A Comparative Study

प्रकाशन: Indian Journal of Educational Research

"Participatory moral programs like Anand Sabha foster deeper ethical grounding than passive curriculum."

3. Bhargava, M. (2021)

शोध शीर्षक: Values in Indian School Curriculum: Rhetoric or Reality

प्रकाशन: Contemporary Education Dialogue

पाठ्यपुस्तकों में मूल्य जैसे करुणा, दया, सहिष्णुता का उल्लेख तो होता है, परंतु छात्रों को व्यवहारिक रूप से उनका अभ्यास कराने के अवसर नहीं मिलते।

अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालयों में जब मूल्य आधारित साप्ताहिक गतिविधियाँ (जैसे आनंद सभा) आयोजित की जाती हैं, तो वे पाठ्यपुस्तकीय शिक्षा की तुलना में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती हैं। आनंद सभा को एक व्यवहारिक नैतिक शिक्षा कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो विद्यार्थियों में मूल्य चेतना के स्थायी विकास हेतु उपयुक्त माध्यम है। "Values cannot be taught merely through stories – they must be lived and experienced, which programs like Anand Sabha allow."

इन शोध-पत्रों से यह स्पष्ट होता है कि:

•मूल्य-शिक्षा को केवल पाठ्य-पुस्तकों या भाषणों के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव और सहभागिता के माध्यम से ही प्रभावी बनाया जा सकता है।

•"आनंद सभा" इस दिशा में एक सकारात्मक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक प्रयास है, जो विद्यार्थियों को नैतिक रूप से सक्षम और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में ले जाता है

भारतीय मूल्य दृष्टि और शिक्षा:

डॉ. आयुष्मान गोस्वामी का यह ग्रंथ भारतीय जीवन-दर्शन और सनातन मूल्य परंपरा की गहराई से पड़ताल करता है। लेखक मानते हैं कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संप्रेषण नहीं है, बल्कि

आत्मा, समाज और ब्रह्मांड के साथ जुड़ने की प्रक्रिया है। यह दृष्टिकोण आनंद सभा पाठ्यक्रम के मूल स्वरूप से मेल खाता है, जहाँ बच्चों को करुणा, सह-अस्तित्व, और आत्मबोध जैसे मूल्यों से जोड़ा जाता है।

"भारतीय मूल्य दृष्टि शिक्षा को आत्मोन्मुख यात्रा मानती है, जिसमें बालक स्वयं को जानकर समाज और सृष्टि से संबंध स्थापित करता है।"

मानवीय चेतना का विकास:

पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि सनातन परंपरा में मानव चेतना केवल बुद्धि तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह सहानुभूति, संवेदनशीलता और करुणा का संवाहक होती है। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी चेतना को प्रारंभिक बाल्यवस्था में जगाने का प्रयास करता है।

"भारतीय दर्शन मानवीय चेतना को एक दैवीय प्रकृति मानता है, जिसका उद्देश्य केवल भौतिक ज्ञान नहीं बल्कि आत्म-चेतना का विस्तार है।"

गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान, पृ. 59.

-सार्वभौमिक नैतिक मूल्य और सनातन विमर्श (Universal moral values and eternal discourse):
इस पुस्तक में बताया गया है कि सत्य, अहिंसा, दया, समता, संयम, और सहिष्णुता जैसे मूल्य न केवल भारतीय बल्कि सार्वभौमिक हैं। आनंद सभा पाठ्यक्रम इन मूल्यों को कहानियों, और अनुभवात्मक विधियों से बच्चों में विकसित करता है।

"सार्वभौमिक मूल्य वही होते हैं जो स्थान, काल और परिस्थिति से परे संपूर्ण मानवता को एक सूत्र में पिरोते हैं – और यही भारतीय मूल्य दृष्टि का मूल है।" गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान, पृ. 66

4. शिक्षा और आत्मबोध : लेखक शिक्षा को आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ते हैं, जो आनंद सभा के प्रत्येक पाठ के मूल में अंतर्निहित है।

"शिक्षा का चरम उद्देश्य आत्मबोध है, जिससे मनुष्य में कर्तव्य-बोध और करुणा का विस्तार होता है।" – गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान, पृ. 83

2.2. शोध में अंतराल

भारतीय शिक्षा व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से नैतिकता और चरित्र निर्माण पर बल देती रही है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयोग (1948) और कोठारी आयोग (1964-66) जैसी प्रतिष्ठित शैक्षिक समितियों ने बार-बार यह दोहराया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं,

बल्कि विद्यार्थियों को एक जिम्मेदार, संवेदनशील और नैतिक नागरिक बनाना है। आज के विद्यालयीन पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों (जैसे – सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, करुणा, सहयोग) का उल्लेख तो किया गया है, वे मुख्य रूप से सैद्धांतिक और पाठ्यपुस्तक आधारित हैं।

मूल्य शिक्षा अक्सर एक अलग विषय के रूप में न पढ़ाई जाकर, कभी-कभी "पढ़ने योग्य" खंडों में सीमित रह जाती है।

मूल्यों को व्यवहारिक रूप से जीने और अभ्यास करने के अवसर बहुत कम दिए जाते हैं।

प्रमुख समस्याएँ:

1.अनुभव आधारित शिक्षा का अभाव: विद्यार्थी जीवन कौशल और नैतिक निर्णय लेने की क्षमताएँ केवल किताबों से नहीं, बल्कि अनुभवों और अभ्यास से सीखते हैं। वर्तमान पाठ्यक्रमों में इस प्रकार की अनुभवात्मक या गतिविधि-आधारित शिक्षा की बहुत कमी है।

2.शिक्षकों का प्रशिक्षण: कई शिक्षक मूल्य शिक्षा को एक औपचारिक दायित्व के रूप में लेते हैं, न कि व्यक्तिगत और सामाजिक बदलाव के औजार के रूप में। इसमें शिक्षकों के प्रशिक्षण और प्रेरणा की भी बड़ी भूमिका है, जो आज भी अपर्याप्त है।

3.आंकलन की पद्धति: मूल्य आधारित व्यवहार को अंक-आधारित परीक्षा पद्धति में मापना कठिन है, जिसके कारण स्कूलों में इसका महत्व गौण हो जाता है।

-आनंद सभा का योगदान: आनंद सभा, जो मध्य प्रदेश राज्य आनंद संस्थान और UHV Foundation के सहयोग से संचालित होती है, इस कमी को भरने का प्रयास है। इसके अंतर्गत: हर सप्ताह बच्चों के साथ मूल्य-आधारित संवाद, , आत्म-चिंतन, समूह चर्चा और गतिविधियाँ कराई जाती हैं। विद्यार्थियों को मूल्य केवल सुनाने या रटवाने के बजाय, उन्हें अनुभव कर पाने का वातावरण दिया जाता है। यह सभा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी को जागरूक करने का प्रक्रियात्मक मॉडल प्रस्तुत करती है।

उदाहरण और संदर्भ : NEP 2020 में "मानव विकास और नैतिक शिक्षा" को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा में एकीकृत करने की सिफारिश की गई है। आनंद सभा इस सिफारिश को व्यवहार में लागू करता है।

UNESCO Report (1996) - "Learning: The Treasure Within" में बताया गया कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ "Learning to live together" है, जो आनंद सभा की संरचना से मेल खाता है। विद्यालयीन शिक्षा में नैतिक मूल्यों की व्यवहारिक समझ को समाविष्ट करने के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आनंद सभा जैसे नवाचार शिक्षण

को एक मूल्यपरक और अनुभव-सम्मत प्रक्रिया बना सकते हैं, बशर्ते इन पर आधारित गहन अकादमिक शोध और नीति निर्माण हो।

2. आनंद सभा कार्यक्रम पर सीमित अकादमिक शोध (Limited academic research on the Anand Sabha programme):

“आनंद सभा” कार्यक्रम मध्य प्रदेश शासन के राज्य आनंद संस्थान और Universal Human Values Foundation (UHV Foundation) द्वारा विकसित एक अभिनव शैक्षणिक पहल है, जिसका उद्देश्य प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के भीतर सार्वभौमिक मानव मूल्यों (जैसे - करुणा, सह-अस्तित्व, आत्मचिंतन, नैतिकता, और सामाजिक चेतना) को व्यवहारिक रूप में विकसित करना है।

यह कार्यक्रम सैद्धांतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन शैक्षणिक शोध के स्तर पर यह क्षेत्र अभी भी अर्धविकसित है। सभी दस्तावेजों और रिपोर्टों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि:

क्र.	क्षेत्र	शोध अंतराल (Gap)
1	नीति और व्यवहार	NEP 2020 और UHV दृष्टिकोण में मानवीय मूल्यों की बात स्पष्ट है, लेकिन इन सिद्धांतों को स्कूल स्तर पर व्यवहार में लाने पर सीमित शोध हुआ है।
2	आनंद सभा का प्रभाव	आनंद सभा पाठ्यक्रम के वास्तविक प्रभावों (learning outcomes) और व्यवहारिक परिवर्तन पर दीर्घकालिक अध्ययन उपलब्ध नहीं हैं।
3	मूल्यांकन प्रणाली	आनंद सभा जैसी मूल्य-आधारित शिक्षा की मूल्यांकन प्रक्रिया पर बहुत कम शोध हुआ है, जिससे इसकी प्रभावशीलता को

		मापना कठिन है।
4	पंच प्रण से संबद्धता	आनंद सभा पाठ्यक्रम का 'पंच प्रण' के संदर्भ में विश्लेषण करना एक नया दृष्टिकोण है, जिस पर पूर्व शोध लगभग नहीं के बराबर है।

1. विद्यालयी स्तर पर पाठ्यक्रम के प्रभाव का सीमित अध्ययन (Limited study of the impact of curriculum at school level):

•यद्यपि UHV और आनंद सभा पाठ्यक्रम पर उच्च शिक्षा में कुछ शोध हुए हैं, परंतु विद्यालयी स्तर (विशेषतः कक्षा 9-12) में इन पाठ्यक्रमों के प्रभाव का व्यवस्थित और तुलनात्मक अध्ययन अभी तक सीमित है।

2. सार्वभौमिक मूल्यों की व्यवहारिक पुष्टि का अभाव (Lack of practical confirmation of universal values):

•विद्यार्थियों के व्यवहार, सोच और संबंधों में इन मूल्यों की व्यावहारिक झलक कितनी है – इस पर विश्लेषणात्मक शोध अपेक्षित है।

3. शिक्षकों की भूमिका और प्रशिक्षण के अध्ययन की कमी (Lack of study on the role and training of teachers):

•आनंद सभा पाठ्यक्रम को लागू करने में शिक्षकों की समझ और प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान है। इस पहलू पर व्यवस्थित अध्ययन नहीं हुए हैं।

4. क्षेत्रीय प्रभाव और विविधता पर तुलनात्मक अध्ययन का अभाव (Lack of comparative studies on regional impact and diversity)

•विभिन्न सामाजिक-आर्थिक, भौगोलिक या शैक्षणिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों पर पाठ्यक्रम के प्रभाव की तुलना करने वाले अध्ययन सीमित हैं।

दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन नहीं –

"आनंद सभा" जैसे कार्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता, और व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना है। परंतु वर्तमान में उपलब्ध अधिकांश अध्ययनों का फोकस केवल इसके तात्कालिक या अल्पकालिक प्रभावों (short-term outcomes) तक सीमित है, जैसे:

•कक्षा में सहभागिता बढ़ना

•छात्रों की नैतिक कहानियों में रुचि

•सहपाठियों के प्रति व्यवहार में विनम्रता

•उत्साहपूर्वक गतिविधियों में भाग लेना

जबकि वास्तविक रूप से मूल्य-आधारित शिक्षा की सफलता तभी मानी जा सकती है जब यह छात्रों के दीर्घकालिक आचरण, जीवन-निर्णयों, और सामाजिक जिम्मेदारी में स्थायी परिवर्तन लाए।

ग्रामीण-शहरी अंतराल की अनुपस्थिति –

"आनंद सभा" कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को व्यवहारिक रूप से छात्रों के जीवन में शामिल करना है। यह कार्यक्रम राज्य आनंद संस्थान (मध्य प्रदेश सरकार) और UHV Foundation द्वारा तैयार किया गया है तथा यह प्रदेश के सभी प्रकार के विद्यालयों (शहरी व ग्रामीण दोनों) में लागू किया गया है।

लेकिन अभी तक उपलब्ध शैक्षणिक शोध या प्रभाव मूल्यांकन इस बात की पड़ताल नहीं करते कि:

क्या ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में इस कार्यक्रम की प्रभावशीलता, सहभागिता, शिक्षक की भूमिका और छात्रों की प्रतिक्रिया एक जैसी है?

इस साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना और Universal Human Values सिद्धांत के अनुरूप एक शैक्षणिक नवाचार है। यह विद्यार्थियों को केवल अध्ययन मात्र नहीं, अपितु एक उत्तरदायी और मूल्यनिष्ठ नागरिक बनने की ओर उन्मुख करता है।

* समावेशिता और विविधता पर शोध की कमी (Lack of research on inclusivity and diversity):

"आनंद सभा" जैसे नैतिक और जीवन-दृष्टि आधारित कार्यक्रमों का उद्देश्य सभी छात्रों को मानवीय मूल्यों से जोड़ना है – चाहे वे किसी भी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से क्यों न आते हों।

परंतु उपलब्ध साहित्य और संस्थागत दस्तावेजों में यह स्पष्ट नहीं है कि यह कार्यक्रम:

•वंचित वर्गों (Socially and Economically Disadvantaged Groups - SEDGs)

•विशेष आवश्यकता वाले छात्र (Children with Special Needs - CWSN)

1. •लिंग, भाषा, जाति और संस्कृति की विविधता को किस सीमा तक समावेशित करता है|

1. वंचित समुदायों की भागीदारी:

•अनुसूचित जाति/जनजाति, ग्रामीण निर्धन पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के लिए मूल्य आधारित कार्यक्रम अत्यधिक उपयोगी हो सकते हैं क्योंकि ये छात्र पहले से ही सामाजिक भेदभाव, असमानता और मनोवैज्ञानिक दबाव का अनुभव करते हैं|•लेकिन “आनंद सभा” की पुस्तिकाओं या प्रशिक्षण मॉड्यूल में इन वर्गों के लिए अलग से अनुकूलन या रणनीति पर कोई विस्तृत सामग्री नहीं मिलती|

2. विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की सहभागिता:

•Visual, hearing, cognitive disabilities वाले छात्रों को ऐसे संवादात्मक और गतिविधि-आधारित कार्यक्रमों में शामिल करना आवश्यक है|

•“आनंद सभा” की गतिविधियों में Inclusive pedagogy की दृष्टि (जैसे Braille सामग्री, चित्रों की पहुँच, संकेत भाषा का उपयोग) का उल्लेख दुर्लभ है|

3. भाषाई और सांस्कृतिक विविधता:

•भारत में भाषा और संस्कृति की विविधता अत्यंत व्यापक है| अनेक छात्र हिंदी या अंग्रेज़ी माध्यम में सहज नहीं होते|

•पाठ्यसामग्री में स्थानीय संस्कृति और बहुभाषिक सामग्री के लिए भी कोई विशिष्ट गाइडलाइन नहीं है, जिससे यह कार्यक्रम कुछ छात्रों के लिए अपरिचित और औपचारिक अनुभव बन सकता है|

4. लैंगिक समावेशिता:

•कई स्कूलों में लड़कियाँ सामाजिक रूप से संवाद या चर्चा में भाग लेने में संकोच करती हैं| “आनंद सभा” की पुस्तकों में लैंगिक संवेदनशील दृष्टिकोण पर बहुत कम ध्यान दिया गया है|

इस क्षेत्र में शोध की बहुत आवश्यकता है, विशेषकर व्यवहारिक प्रभाव, मूल्यांकन पद्धति और शिक्षक-प्रशिक्षण के संबंध में, ताकि आनंद सभा जैसे पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके| आनंद सभा एक सकारात्मक पहल है, लेकिन शैक्षणिक मूल्यांकन की निरंतरता की कमी के कारण इसके दीर्घकालिक प्रभाव स्पष्ट रूप से सामने नहीं आ सके हैं|

इसलिए इस दिशा में दीर्घकालिक, गुणात्मक और तुलनात्मक शोध की आवश्यकता है ताकि यह प्रमाणित किया जा सके कि “मूल्य शिक्षा” केवल कक्षा की बात नहीं, बल्कि जीवन की दिशा बन सकती है।

यूट्यूब वीडियो संसाधन: वीडियो की प्लेलिस्ट के माध्यम से कार्यशालाओं और प्रतिभागियों के अनुभव साझा किए गए हैं ।

Former Chairman AICTE about UHV FDP (2021-06-28)

Introduction to Universal Human Values (Hindi)

आनंद की ओर | Anand Sansthan | Madhya Pradesh

UHV | Anand Sansthan | Madhya Pradesh

Sh. Praveen K Gangrade, Director Rajya Anand Sansthan | Panel Discussion on Human Values in Children

UHV चैप्टर 2 *स्व अन्वेषण #सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित आनंद सभा

संदर्भ: Rogers, C. (1961). On Becoming a Person: A Therapist’s View of Psychotherapy. Boston: Houghton Mifflin

संदर्भ: Vygotsky, L. S. (1978). Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Harvard University Press.

संदर्भ: CASEL (2020). Core SEL Competencies. www.casel.org

संदर्भ (Refrence): Radhakrishnan Commission. (1949). Report of the University Education Commission. Ministry of Education, Government of India.

•Kothari Commission. (1966). Education and National Development: Report of the Education Commission 1964-66. New Delhi: NCERT.

•UNESCO. (1996). Learning: The Treasure Within (Delors Report). UNESCO Publishing.

सन्दर्भ (Refrence): Gawane, R. R. (2012). Value Education through Practice: A Constructivist Approach. Journal of Value Education, 15(2), 45-58.

सन्दर्भ (Refrence): Sharma, A. (2018). Impact of Participatory Ethical Education Programs in Secondary Schools: A Comparative Study. Indian Journal of Educational Research, 12(1), 22-39

सन्दर्भ (Refrence): Bhargava, M. (2021). Values in Indian School Curriculum: Rhetoric or Reality? Contemporary Education Dialogue, 18(1), 65-68

– गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान (2023), भारतीय मूल्य दृष्टि: एक सनातन विमर्श, पृ. 47

संदर्भ (Refrence):

Goswami, A. (2020). भारतीय मूल्य दृष्टि: एक सनातन विमर्श. जयपुर:[साहित्यागार]।